ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 99-101**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

देवकली विकास खण्ड, जनपद–गाजीपुर में मकानों तथा अधिवासों का वितरण–एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 प्रहलाद सिंह यादव
असि0प्रोफेसर– भूगोल, मूलचंद पी.जी. कालेज, होलीपुर–गाजीपुर (उ0प्र0) भारत

Received-30.01.2025, Revised-08.02.2025, Accepted-14.02.2025 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः मनुष्य अधिवासों का निर्माण स्वयं रहने हेतु करता है। अध्ययन क्षेत्र में धरातल पर अधिवास और मकानों का अध्ययन सांस्कृतिक भू–दृश्य के रूप में किया गया है। अधिवासों में यह विशेषता देखी गयी कि जातीय आधार पर भी गाँवों में मकान का निर्माण हुआ है। मकानों का निर्माण मुख्य रूप से मानव अपने सुरक्षा की दृष्टि से किया है। अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक न्याय पंचायत में मकानों का निर्माण, कृषि, पशुपालन, बाजार, सड़क, पानी आदि को ध्यान में रखकर किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में गहन निर्वहन कृषि की प्रधानता है। आज के विकास के दौड़ में भी पिछड़ी जाति और दलित परिवार झोपड़ियों में रहने को विवश है।

कुंजीभूत शब्द– धरातल, अधिवास, सांस्कृतिक भू–दृश्य, जातीय आधार, सुरक्षा की दृष्टि, न्याय पंचायत, कृषि, पशुपालन, बाजार

समस्त भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार ही अधिवासों का जन्म होता है। अतः अधिवासों के अध्ययन के लिए भौगोलिक कारकों का अध्ययन किया जाना बहुत ही आवश्यक है। अधिवास का अध्ययन भूतल की क्षेत्रिय विभिन्नताओं का अध्ययन है इस पर पाए जाने वाले तत्व जलवायु, वनस्पतियाँ, वस्तियाँ, जनसंख्या भूमि का उपयोग इसी तल पर होता है। इस सभी तत्वों से बनने वाली जटिलताओं व अन्तर सम्बन्धों से बनने वाली विभिन्नताओं के अध्ययन का प्रभाव अधिवासों पर पड़ता है भूगोल की जटिलताओं एवं विचार धाराओं के चलते भूगोल की नई–नई शाखाएँ वर्गीकृत की गयी जिसमें बस्ती भूगोल, जनसंख्या भूगोल, उद्योग भूगोल आदि बस्ती घरों, मकानों का समूह होता है। जो मानव का प्राथमिक आवश्यकता है।ग्रामीण बस्तियों के विवरण का अध्ययन 1960 के बाद विशेष रूप से किया गया। अध्ययन क्षेत्र में मकानों के आधार पर अधिवासों के वितरण पर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव परिलक्षित होते है अध्ययन कर्ता ने मकानों के आधार पर अधिवासों का वितरण को अध्ययन क्षेत्र में अपनाया है अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान भू–भाग है। जिसमें मकानों को आधार बनाकर अधिवासों के वितरण को अध्ययन क्षेत्र में अपनाया है। अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान भू–भाग है जिसमें मकानों को आधार बनाकर अधिवासों का वितरण छोटी–छोटी बस्तियों से होकर बड़े–बड़े अधिवासों का रूप ले लिया जिसका प्रभाव भी अध्ययन क्षेत्र में समीचीन है।

क्षेत्रीय अध्ययन की रुपरेखा– प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र देवकली विकास खण्ड गाजीपुर जिला उ.प्र. का मैदानी भू–भाग है, जो गाजीपुर जनपद के सैदपुर तहसील में स्थित है। जिसके दक्षिण सीमा पर गंगा नदी बहती है देवकली विकास खण्ड के अन्तर्गत जलोढ़ मिट्टी की अधिकता है जो गंगा नदी द्वारा लाकर विछायी गयी है। इस भू–भाग का भौगोलिक क्षेत्रफल 20600.74 हे. है। इसका विस्तार 830 18′ पूर्वी देशान्तर से 830 28′ पूर्वी देशान्तर तक एवं 250 27′ उत्तरी अक्षांश से 250 37′ उत्तरी अक्षांश तक विस्तृत है। यह भू–भाग मैदानी है जिसमें 12 न्याय पंचायत (नारीपचदेवरा, धरवां, बरहपुर, पहाड़पुर, बुढ़नपुर, देवचन्दपुर, बासूपुर, सिरगिथा, तुरना, देवकली, धुवार्जुन और भितरी) और 106 ग्राम पंचायते है। गावों की सख्या 253 जिसमें 27 गैर आबाद गाँव हैं अध्ययन क्षेत्र देवकली विकास के पूर्व में सदर विकास खण्ड, पश्चिम में सैदपुर विकास खण्ड उत्तर पश्चिम में सादात विकास खण्ड, उत्तर में मनिहारी विकास खण्ड तथा दक्षिण पूर्व में करंडा विकास खण्ड है। दक्षिण सीमा पर गंगा नदी एवं चन्दौली जनपद की सीमा से लगती है। आकार की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र की लम्बाई मध्यवर्ती भाग में लगभग 40 किलोमीटर पश्चिम से पूर्व दिशा में तथा उत्तर से दक्षिण 34 किलोमीटर चौड़ाई प्राप्त है। जो अधिकतर सीमा बिन्दु को दर्शाता है।

अनुसंधान की रूपरेखा– सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें कितनी निर्भरता योग्य सूचनाओं और तथ्यों का समावेश किया गया है। यह सफलता सूचना स्रोतों की विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध कार्य में समंको का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत से लिया गया है। इन दोनों ही स्रोतों से समंको के संकलन में अलग–अलग प्राविधियों का समावेश किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में शोध कर्ता द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों से आकड़ें एकत्रित किये गये और साथ ही प्रकाशित एवं अप्रकाशित आलेखों रिपोर्ट, सांख्यिकीय पत्रिका, पत्र डायरी, प्रश्नावली, सूची, साक्षात्कार, निरीक्षण, निदर्शन, मनोवृत्ति मापक पैमाने, सारणीयन, परीक्षण, विश्लेषण आदि विधि तंत्रों का प्रयोग अनुसंधान कर्ता द्वारा अपने अध्ययन क्षेत्र में प्रयोग किया गया है।

आकृति विश्लेषण– ग्रामीण अधिवासों के आकारकीय विश्लेषण, वास स्थल, भौतिक लक्षण, सतह पर बहने वाली जलराशि, नदी विसर्प कृषि और भू–खण्डो के विन्यास तथा सांस्कृतिक तत्वों से सम्बन्धित होता है। भारतीय विद्वानों में प्रो. आर.एल. सिंह ने इस प्रकार की शुरुआत मध्यगंगा के गावों के विन्यास की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए की इस प्रदेश में सभी गाँव एवं मकान प्रत्येक कृष्य या अन्य भूमि की पृथक पट्टी का निर्माण करते हुए निश्चित खेत सीमाओं के साथ स्थित ग्राम सीमा की तरह अनेक वर्गों एवं आयतों में विभक्त है। आवसीय मकान स्थल एवं ग्राम सीमा एक दुसरे पर आधारित हैं। आवासीय मकान क्षेत्र और ग्राम सीमा की आकृति का विश्लेषण बहुत सार्थक हो उठता है।

मकान वास एवं गृहों के घनिष्ठ संरचनागत विन्यास को अर्थवत्ता प्रदान करते है, जो कि ऐतिहासिक सांस्कृतिक साथ ही साथ भूमि मृदा भू–पृष्ठीय जल आदि के भौतिक लक्षणों के प्रतिफल हैं। आकार एवं आकृति विश्लेषण की धारणा को अपवाह बेसिन के लिए थामसन ने 1917 में विकसित किया इसी का अनुसरण हैगेट ने भी किया।

मकान बनाने की उद्देश्य–

1. मकान मानव संस्कृति के निवास तथा उद्भव की सीढ़ी है।
2. मकान जंगली जानवरों एवं प्राकृतिक प्रकोपों से सुरक्षा प्रदान करता है।
3. मकान से मानव को मानसिक रूप से स्वामित्व एवं एकाधिकार की भावना प्राप्त होती है।
4. शत्रुओं से मकान सुरक्षा प्रदान करते हैं।
5. मकान व्यक्तियों के विकास का महत्वपूर्ण प्रतीक है।
6. निद्रा एवं आराम के लिए आश्रय प्राप्त होता है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

7. मकान वह ढाँचा है, जो मानव के निवास अथवा शरण सम्बन्धी जरूरतों को पूरा करती हैं।

प्रकार एवं प्रयुक्त समाग्री– अध्ययन कर्ता द्वारा अध्ययन क्षेत्र में अनुसंधान के फलस्वरूप निम्नलिखित प्रकार के मकान का स्वरूप देखने को मिला।

1. झोपडी– नरकुल, घास, बॉस, लकड़ी,कच्ची मिट्टी, पोरा आदि।
2. कच्चे मकान– कच्ची मिट्टी, बॉस, लकड़ी, ईट आदि।
3. टिन शेड– पक्की ईट, सीमेंट, टिन आदि।
4. पक्के मकान– ईट, पत्थर, सीमेंट, लोहा, शीशा आदि।

अध्ययन क्षेत्र के मकानों की प्रमुख विशेषताएँ–

1. कृषक और जानवरों के रहने के आधार पर मकान बनाएँ जाते है ।
2. कृषक मजदूरों के व गरीब, निर्धन लोगो के छोटी–छोटी झोपड़ियों वाले मकान ।
3. औसत स्तर के किसानों के एक स्तर औसत मकान ।
4. सड़को के किनारे आर्थिक आधार पर सम्पन्न व्यापारी, और कृषकों के बहुमंजिला मकान ।
5. दीवार निर्माण समाग्री के आधार पर गृह के मध्य भाग में मिट्टी बाँस और टहनियों एवं घास फूस का प्रयोग किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र देवकली विकास खण्ड में अधिवासों के वितरण में मकानों के आधार की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । एक अधिवासीय श्रेणी के अन्तर्गत विविध प्रकार के मकानों का निर्माण होता है । अतरू इन विशेषताओं के आधार पर अध्ययन क्षेत्रों को चार भागों में बाटा गया है । अध्ययन का मूल आधार प्रत्येक बस्ती में मकानों की संख्या है । इसमें एकल बस्ती से लेकर बड़ी–बड़ी बस्तियों को रखा गया है ।

तालिका– देवकली विकास खण्ड में मकानों के आधार पर अधिवासों का वितरण :

वर्ग	मकान संख्या	प्रतिशत	न्याय पंचायत की संख्या	प्रतिशत
1000 कम	990	4.64	1	8.34
1000–1200	5387	25.26	4	33.33
1200–1400	5012	23.50	3	25.00
1400 से अधिक	9935	46.60	4	33.00
योग	21324	100.00	12	100.00

स्रोत : जिला जनगणना हस्तपुस्तिका गाजीपुर (सांख्यिकीय पत्रिका–2020)

1–अति न्यून श्रेणी के अधिवासों का वितरण– अध्ययन क्षेत्र देवकली विकासखण्ड में अति न्यून श्रेणी के अधिवासों का वितरण 1000 से कम मकान जिसमें 990 मकान देखे गए है। जिसके अन्तर्गत एक न्याय पंचायत बासूपुर है। जिसमें प्रमुख गाँवों में बासूपुर, कनौली, महुलियाँ महमूदपुर हथिनी, पियरी, वाजिदचक, सिकन्दरा, सद्कूचक, दारुनपुर आदि ग्राम शामिल है।

2–न्यून श्रेणी के अधिवासों का वितरण– इस श्रेणी के अंर्तगत 5587 मकानों की संख्या प्राप्त है इसके अंतर्गत चार न्याय पंचायते शामिल है । जिसमें धारवां, बूढ़नपुर, तुरना, धुवार्जुन है इन न्याय पंचायतों में बस्तियों के वितरण पर भूमि उपयोग एवं भौतिक, सांस्कृतिक, समाजिक, आर्थिक, राजनितिक गातिविधियों का प्रभाव भरपूर देखने को मिला है। इन न्यायपंचायतों के अंर्तगत कुछ प्रमुख ग्राम भवानीपुर, दुबैठा, धारवां, जेवल, खनकाह खुद, धुवार्जुन,पहला टोला, विसकलान हरसिंह पट्टी, मुर्तजिपुर, कान्धपुर, रसूलपुर कोलवर, विशुनपुर कला राजमलपुर, सियावाँ, तुरना, राजुपुर, सगरा, कुर्बानसराय, बडहरा, आलमपुर, सादुल्लाहपुर, पिपरही, डिहिया, कुसम्ही खुर्द, पठानपुर, किशोहरी, चकजगजीवन सराय शरीफ, कुंडीपुर, गोला, तारडीह आदि प्रमुख ग्राम शामिल है।

3–मध्यम श्रेणी के अधिवासों का वितरण– मध्यम श्रेणी के अंर्तगत मकानों की कुल संख्या लगभग 5012 पायी गयी जो कुल का 23.50ः है इसके अंर्तगत तीन न्याय पंचायते आती है । जिसमें पहाड़पुर कला, देवचन्दपुर, भितरी है इन न्यायपंचायतों के अंर्तगत कुछ प्रमुख गावों के नाम बुढौली, गरथौली, मऊपारा, नसीरपुर उर्फ दुर्गापुर, खानकाह कला, बासुचक, मालिकशाहपुर, टड़िया, महीचा, निन्दोपुर, राद्दीपुर, बारी, बड़ीबारी, मनसुखवां, सिकन्दरपुर, खोजनपुर, चकफातमा उर्फ बलुआ, आगापुर शामिल है।

4–उच्च कोटि के अधिवासों का विवरण– उच्च कोटि के अधिवासों के अंतर्गत मकानों की संख्या लगभग 9935 या 46.60ः है। इसके अंतर्गत चार न्याय पंचायते जिसमें देवकली, सिरगिथा, बरहपुर, नारी पचदेवरा है इन न्याय पंचायतों अंतर्गत प्रमुख ग्राम सईचना, पचरासी, शिवधनपट्टी, श्रीरामबैरागी, सोन्हूली, कटघरा कादीमान, सिरगिथा, डंडापुर, पहलवानपुर, चिलार, बरहपुर, सिहोरी, रामपुर बंतरा, बेलासी, बेलसड़ी, बाघी, लोनेपुर, धनईपुर प्रमुख है। सामान्यतः अधिक गाँवों में कम श्रेणी जनसंख्या निवास करती है तथा कम गाँवों में अधिक जनसंख्या निवास करती है। क्षेत्र में सामान्य स्थिति से भिन्न यह अपवाद स्वरूप है।

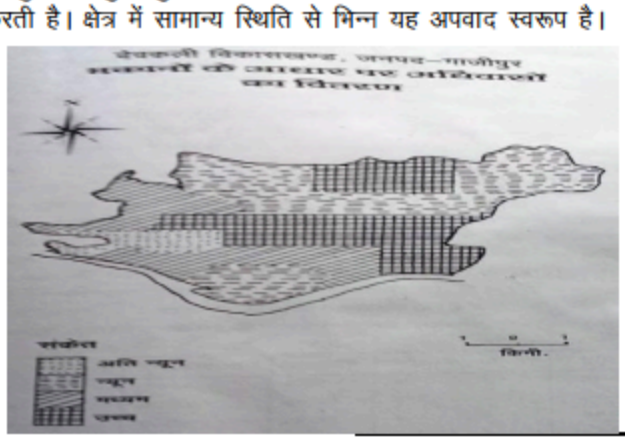

निष्कर्ष– अध्ययन क्षेत्र में यह पाया गया है कि मनुष्य अधिवासों का निर्माण स्वयं रहने हेतु करता है। अध्ययन क्षेत्र में धरातल पर अधिवास और मकानों का अध्ययन सांस्कृतिक भू–दृश्य के रूप में किया गया है। अधिवासों में यह विशेषता देखी गयी कि जातीय आधार पर भी गाँवों में मकान का निर्माण हुआ है। मकानों का निर्माण मुख्य रूप से मानव अपने सुरक्षा की दृष्टि से किया है। अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक न्याय पंचायत में मकानों का निर्माण, कृषि, पशुपालन, बाजार, सड़क, पानी आदि को ध्यान में रखकर किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में गहन निर्वहन कृषि की प्रधानता है। आज के विकास के दौड़ में भी पिछड़ी जाति और दलित परिवार झोपड़ियों में रहने को विवश है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र के गाँवों में मकानों का जो स्वरूप है वह चिन्ताजनक है उसमें सुधार की आवश्यकता है, क्योकि सरकार के द्वारा दिए गये लोहिया आवास, इन्दिरा आवास और पशुओं के लिए कैटल शेड की व्यवस्था की गयी है जो पर्याप्त नही है और भी सुधार की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह जगदीश, परिवहन तथा व्यापार भूगोल उ.प्र. हि.प्र. अकादमी।
2. A Locational Theory of Rural Settlement .
3. डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल, ग्रामीण बस्ती भूगोल।
4. वार.संस, जे.ए.– एण्ड राविन्स एल 1940 दृ "ए. न्यू मैथड आफ डिस्पर्ट रूलर पापुलेशन ज्योग्राफी"।
5. आर.सी. तिवारी दृ 'अधिवास भूगोल' प्रयागपुस्तक भण्डार इलाहाबाद।
6. एच. सी. सिंह दृ रूलर इनवारमेंट डेवलपमेंट एण्ड प्लानिंग" चुंग पब्लिकेशन इलाहाबाद पृष्ठ संख्या 68.
7. मौर्य एस.डी. दृ "अधिवास भूगोल" शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद द्वितीय संशोधित एवं परिवद्वित संस्करण 2009.
8. राज मानिक दृ ग्रामीण अधिवासों का भौगोलिक अध्ययन।
9. Pandey P-P-& The problems of wasteland and the Rural Development A Study of usar new Delhi.
10. Yadav P-S- भूमि उपयोग और अधिवासों का भौगोलिक विश्लेषण।

*****